पद ११५

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

रतुनियां रामा करिसी आरामा। स्मरतां कां न ये रामा।।ध्रु.।। रामासी देखोनि रामासि न भजसी। नरा ऐसी रीत न ये कामा।।१।। भवसागरिचा त्रास धरुनियां। आळवी त्या घनश्यामा ।।२।। माणिक म्हणे प्रभु स्मरण करा रे। तो नेईल निजधामा ।।३।।